Answers to RHA/Set-3

खंड–'क' (अपठित बोध)

1. (*i*) (घ) कथन 2 और 4 सही हैं।

(*ii*) (ग) कथन सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(*iii*) (घ) संगीत और नृत्य को

(*iv*) धर्म भारतीय संस्कृति का अहम हिस्सा है। यहाँ हिंदू, इस्लाम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि अनेक धर्मों के लोग सदियों से रह रहे हैं। हर धर्म का अपना त्योहार, पूजा-पद्धति और अनुष्ठान है लेकिन सभी में एक-दूसरे के प्रति सम्मान और सहिष्णुता का भाव रहता है।

(*v*) भारतीय संस्कृति में परिवार का विशेष महत्व है। यहाँ संयुक्त परिवार अधिक संख्या में हैं जिसमें तीन-चार पीढ़ियाँ एक साथ रहती हैं। संयुक्त परिवार में बुजुर्गों का देखभाल और बच्चों की परवरिश का विशेष ध्यान रखा जाता है। पारिवारिक मूल्यों में मेलजोल, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना प्रमुख होती है।

2. (*i*) (ख) श्रमिक महिला का

(*ii*) (ख) उसका शरीर साँवला है।

(*iii*) (घ) कथन सही है, किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है।

(*iv*) श्रमिक महिला गरमी में इलाहाबाद की किसी सड़क के किनारे पत्थर तोड़ रही है। वह जहाँ काम कर रही है वहाँ कोई छायादार पेड़ नहीं है जो उसे गरमी की प्रखरता से बचा सके। वह हाथ में भारी हथौड़ा लेकर बार-बार पत्थरों पर चोट कर रही है, उसे तोड़ रही है।

(*v*) श्रमिक युवती हाथ में भारी हथौड़ा लेकर पत्थरों पर ही नहीं प्रहार कर रही है, बल्कि सामने उन तरुमालिका, अट्टालिका और सुविधासंपन्न लोगों के साथ-साथ उस व्यवस्था पर भी चोट कर रही है जहाँ शोषित मजदूर प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करते हैं और शोषक उनसे बेखबर होकर सुख-सुविधाओं में रह रहे हैं।

खंड–'ख' (व्यावहारिक व्याकरण)

3. (*i*) यह जो बालसुलभ हँसी है, इसी में कई यादें बंद हैं।

(*ii*) विशेषण आश्रित उपवाक्य

(*iii*) संयुक्त वाक्य

(*iv*) लेनिन रोटी के सूखे टुकड़ों को स्वयं नहीं खाता था और दूसरों को खिला दिया करता था।

(*v*) मिश्र वाक्य

4. (*i*) बाबू जी द्वारा रामायण का पाठ किया जाता था।

(*ii*) दर्द के कारण उससे चला नहीं जा सकता।

(*iii*) कर्तृवाच्य

(*iv*) नवाब साहब ने खीरे पर मसाला छिड़का।

(*v*) भाववाच्य

5. (*i*) अकर्मक क्रिया, आदरार्थक बहुवचन, पुल्लिंग, भूतकाल

(*ii*) भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, अधिकरण कारक

(*iii*) रीतिवाचक क्रियाविशेषण, 'होने लगा' क्रिया की विशेषता बताने का कार्य

(*iv*) गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, बहुवचन, 'फाँकें' विशेष्य।

(*v*) संबंधबोधक अव्यय, पूजा-पाठ और राम-राम के बीच संबंध प्रकट कर रहा है।

6. (*i*) उत्प्रेक्षा अलंकार

(*ii*) मानवीकरण अलंकार

(*iii*) अतिशयोक्ति अलंकार

(*iv*) उपमा अलंकार

(*v*) रूपक अलंकार

खंड–'ग' (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

7. (*i*) (ग) कथन 2 और 4 सही हैं।

(*ii*) (क) धान की रोपनी का काम।

(*iii*) (घ) कथन सही है किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है।

(*iv*) (घ) रोपनी करने वाले की अँगुलियाँ थम जाती हैं।

(*v*) (ग) केवल कथन 2 सही है।

8. (क) लेखक के अनुसार सभ्यता और संस्कृति तब खतरे में पड़ जाती है जब किसी जाति अथवा देश पर अन्य लोगों की ओर से आक्रमण होता है। हिटलर के आक्रमण के कारण मानव संस्कृति खतरे में पड़ गई थी। धर्म, संप्रदाय, वर्ण व्यवस्था आदि के नाम पर होने वाले दंगों से भी संस्कृति खतरे में पड़ जाती है।

(ख) हालदार साहब जब पहली बार कस्बे से गुज़रे, तो उनके चेहरे पर कौतुकभरी मुस्कान फैल गई, क्योंकि कस्बे के मुख्य चौराहे पर उन्होंने नेताजी की सुंदर मूर्ति देखी, जो संगमरमर की बनी हुई थी, लेकिन मूर्ति पर लगा चश्मा वास्तविक था।

(ग) लेखक बालगोबिन भगत के स्वभाव तथा व्यक्तित्व पर मुग्ध थे। वे उनके संगीतमय जादू से चमत्कृत थे। उन्हें आश्चर्य होता था कि एक गृहस्थ होते हुए भी साधुओं जैसा जीवन भगत जी कैसे बिताते हैं। उनके शांत स्वभाव, संगीत-साधना तथा निश्चित दिनचर्या पर वे मुग्ध थे।

(घ) माँ में इतनी विशेषताएँ होते हुए भी लेखिका अपनी माँ को अपना आदर्श नहीं बना सकीं। लेखिका स्वयं स्वतंत्र विचारों की थीं। वे अपने अधिकार और कर्तव्य समझती थीं। माँ पिता जी की हर ज़्यादती को अपना प्राप्य समझकर सहन करती थीं। माँ की असहाय मजबूरी में लिपटा उनका त्याग और सहनशीलता कभी भी लेखिका का आदर्श नहीं बन सका।

9. (*i*) (क) केवल कथन 2 सही है।

(*ii*) (घ) कथन सही है किंतु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं है।

(*iii*) (ग) गोपियाँ कृष्ण प्रेम में पूर्ण रूप से आसक्त हैं।

(*iv*) (क) वे निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे।

(*v*) (ग) श्री कृष्ण को

10. (क) अपने इष्ट की प्रिय वस्तु के टूट जाने पर मुझे क्रोध अवश्य आता, परंतु मैं उस क्रोध की अभिव्यक्ति मर्यादा में रहकर करता, क्योंकि मेरे विचार में मर्यादाएँ केवल छोटों के लिए ही नहीं बड़ों के लिए भी आवश्यक हैं। अतः मर्यादित आचरण करके पहले मैं उस तथ्य का पता लगाता, जिसके कारण शिव धनुष-खंडन की घटना घटित हुई। यह विचार करके कि धनुष का टूटना एक शुभ घटना थी और धनुष का खंडन करने वाले स्वयं विष्णु के अवतार श्रीराम थे, मैं श्रीराम का सम्मान करता और उनको शुभकामनाएँ देता। ये शुभकामनाएँ इसलिए भी होतीं कि उन्होंने धनुष का खंडन करके राजा जनक को पुत्री के विवाह की चिंता से मुक्त कर दिया था।

(ख) हमारे पाठ्यक्रम में 'उत्साह' कविता में बादलों की गर्जना का आह्वान किया है। कवि बादलों की गर्जना का आह्वान करके इस संसार के व्याकुल, उदास और ताप से पीड़ित (दुखी) लोगों को सुख देना चाहता है। कवि का मानना है कि बादलों की गर्जना से एक नए उत्साह और शक्ति का सृजन होता है। वर्षा-जल से लोगों को शीतलता एवं तृप्ति मिलती है।

(ग) ये पंक्तियाँ 'संगतकार' कविता से ली गई है। संगतकार लगातार यह कोशिश करता है कि उसका स्वर मुख्य गायक के स्वर से कहीं ऊँचा न हो जाए, परंतु यह उसकी असफलता नहीं है, न ही कमज़ोरी और न ही हीनता; अपितु यह तो उसकी मनुष्यता है, जिसके पीछे यही भावना छिपी रहती है कि दूसरे को हीन दिखाकर या दबाकर अपनी महानता प्रदर्शित करना मनुष्यता नहीं है। इससे उसके मानवतावादी विचारों का बोध होता है।

(घ) आत्मकथा लिखते समय अपने अतीत का हर पन्ना खोलना होगा। जीवन से जुड़े दुखों, अभावों तथा असफलताओं एवं हृदयगत दुर्बलताओं का उल्लेख करना होगा। मानव का स्वभाव है, वह दूसरों के दुखों को देखकर आनंद लेता है, उसका उपहास उड़ाता है। कवि उससे बचना चाहते हैं। कवि की व्यथाएँ थककर सो चुकी हैं। कवि आत्मकथा द्वारा उन्हें पुनः जगाना नहीं चाहते।

11. (क) वर्तमान पीढ़ी अपनी सुख-सुविधा व आराम के लिए प्रकृति को जाने-अनजाने नष्ट कर रही है। पर्यटन स्थलों को गंदा कर वहाँ के प्राकृतिक सुंदरता को नष्ट कर रही है। लोग सैर-सपाटे के लिए वहाँ जाते हैं और कूड़ा-करकट फैलाकर उन्हें गंदा कर देते हैं। सैर-सपाटे के दौरान पर्वतीय स्थलों की सुंदरता को बनाए रखना हमारी ज़िम्मेदारी है। हमें साफ़-सफ़ाई का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए। इधर-उधर कूड़े नहीं फैलाना चाहिए। एक जागरूक नागरिक होने के नाते हमें प्रदूषण फैलाने वाले वाहनों एवं उपकरणों के प्रयोग से भी बचना चाहिए।

(ख) भोलानाथ और उसके साथियों के खेलों में स्थानीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। उनके खेल-सामग्रियों में घर एवं घर के आसपास के उपलब्ध साधनों जैसे चूहेदानी, काठ की पटरी, आम और केले की टहनी, कुल्हिए, खटोली, रस्सी आदि का प्रयोग किए जाते थे। लेकिन आज खिलौनों का रूप बदल गया है। आज प्लास्टिक और इलेक्ट्रॉनिक्स के महँगे खिलौने आ गए हैं। आज रिमोट से चलने वाली गाड़ियाँ व वीडियो गेम बच्चों का पसंदीदा खेल बन गया है। बच्चे बाहर खेलने के बजाय बंद घरों के भीतर खेलना पसंद करते हैं। इस प्रकार बच्चों द्वारा खेले जाने वाले आधुनिक खेल पारंपरिक खेलों से बिलकुल भिन्न हैं।

(ग) यह सच है कि विज्ञान का उपयोग या दुरुपयोग मानव की इच्छा पर निर्भर है। हिरोशिमा की घटना विज्ञान का भयानकतम दुरुपयोग है और आज भी जीवन के हर क्षेत्र में विज्ञान का दुरुपयोग देखा जा सकता है। इसके दुरुपयोग से अनेक तरह के विध्वंसकारी उपकरण जैसे बम, मिसाइल, तोप आदि बनाए जा रहे हैं। दैनिक जीवन में भी इसका दुरुपयोग तेज़ी से बढ़ता जा रहा है। किसान कीटनाशक और जहरीले रासायनिक पदार्थ का उपयोग करते हैं। इससे फ़सलों के पौष्टिक तत्व नष्ट हो जाते हैं तथा ये हमारे स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करते हैं। विज्ञान के आधुनिक उपकरणों जैसे एयरकंडीशन, फ्रीज, हीटर आदि के प्रयोग से वातावरण में गरमी एवं प्रदूषण बढ़ रहा है। इस प्रकार मानव अपनी आवश्यकता की पूर्ति एवं विलासितापूर्ण जीवन के लिए वैज्ञानिक उपकरणों का दुरुपयोग कर रहा है।

खंड–'घ' (रचनात्मक लेखन)

12. (क) **वोकल फॉर लोकल**

वोकल फॉर लोकल भारत को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने का भारत सरकार का एक बहुत ही बड़ा उपक्रम है। भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए 'मेक इन इंडिया' परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए इस मुहिम को शुरू किया गया है। इसके मुख्य बिंदुओं में से एक है – अपने व्यवसाय को, अपने उत्पाद की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए अनुसन्धान तथा विकास में निवेश करना; अंतरर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय अर्थव्यवस्था को और भी सुदृढ़ करना; इसके साथ-साथ अपने उत्पाद को इस प्रकार बनाना कि वह पर्यावरण के अनुकूल रहे। व्यवसाय में जहाँ नेटवर्किंग एक बहुत बड़ा माध्यम होती है उसी के लिए इसको नाम दिया गया वोकल फॉर लोकल। इसका लक्ष्य अंतरराष्ट्रीय बाजार में भारत की उन्नति को बढ़ाना तथा संयुक्त उद्यम और साझेदारों को चाहे वह छोटे ही क्यों न हों, उनको बाजार में चलन में लाना ताकि वह अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को इसका अत्यधिक लाभ होगा क्योंकि यह कृषि से लेकर छोटे-छोटे उद्योगों

को मज़बूती प्रदान करेगा। 'एक जिला एक उत्पाद' का सुंदर उदाहरण है – कर्नाटक में बनने वाले लकड़ी के सुंदर खिलौने। इस मिशन से जो भी लघु अथवा कुटीर उद्योग या ग्रामीण उद्योग लगाए गए हैं उन्हें मज़बूती मिलेगी तथा साथ ही अपना उत्पादन, अपना बाजार, अपनी आय, आत्म-निर्भरता का संकल्प भारत को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दिलाएगा।

(ख) **लोकतंत्र और चुनाव**

लोकतंत्र का एक अहम हिस्सा है-चुनाव। चुनाव को निर्वाचन-प्रकिया के नाम से भी जाना जाता है। चुनाव के बिना लोकतंत्र की परिकल्पना करना मुश्किल है। चुनाव ही लोकतांत्रिक देश के व्यक्ति को वह शक्ति देता है कि वह अपने नेता को चुन सके। चुनाव में लोगों के मत का बहुत महत्व होता है। चुनाव में ही एक नागरिक अपनी मतदान की शक्ति का प्रयोग करके बड़ा परिवर्तन ला सकता है। जनता अपने सांसदों, विधायकों एवं न्यायपालिकायों का चुनाव करती है। ये चुने हुए प्रतिनिधि जनता की आवाज़ होते हैं। इस तरह से लोकतंत्र में चुनाव प्रक्रिया एक सामान्य नागरिक को विशेष अधिकार प्रदान करता है क्योंकि चुनाव में मतदान करके वह सत्ता एवं शासन के संचालन में हिस्सेदार बन सकता है। लोकतंत्र की सुरक्षा एवं सफलता के लिए आवश्यक है कि शासकीय पदों पर कर्मठ एवं ईमानदार लोग ही चुनकर जाएँ। हमें कभी भी जाति-धर्म के आधार पर मतदान नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे लोकतंत्र खतरे में पड़ सकता है। जब शासकीय पदों पर कर्मठ एवं ईमानदार प्रतिनिधि चुनकर जाएँगे तभी देश का विकास होगा।

(ग) **योग से ही मोक्ष**

भारतीय संस्कृति में 'योग' का महत्वपूर्ण स्थान है। यह एक ऐसी क्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी इंद्रियों को वश में करके लाभ ही नहीं मोक्ष भी प्राप्त कर सकता हैं। भारतीय संस्कृति में चार प्रकार के योग कहे गए हैं जिसमें कर्म योग, भाव योग, ज्ञान योग और क्रिया योग की बात कही गई है। योग से स्वास्थ्य लाभ भी होता है जिससे हमारा पाचन तंत्र स्वस्थ होता है। इसके साथ ही हमारा स्नायु-तंत्र, श्वास-तंत्रियाँ भी पुष्ट होती हैं। शरीर में लगने वाली बहुत-सी बीमारियाँ योग के कारण दूर हो जाती हैं। कोरोना काल में भारत ने योग के माध्यम से विश्व गुरु की भूमिका निभाई। योग से मानसिक और शारीरिक संतुलन प्राप्त किया जा सकता है। इससे माँसपेशियाँ मजबूत होती हैं और व्यक्ति, प्रसन्नचित्त रहता है। योग्य से मोक्ष की प्राप्ति संभव है क्योंकि हमारा अष्टचक्र भी इसी प्रक्रिया का एक हिस्सा है। यह ऊर्जा जब मनुष्य को प्राप्त होती है तो वह ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है ऐसा शास्त्रों में लिखा गया है। इसलिए योग मोक्ष तक ले जाने की एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है।

13. (क) परीक्षा भवन

नई दिल्ली

दिनांक – 20 जून, 20xx

सेवा में

मुख्य संपादक

दैनिक भास्कर

मंडी हाउस, नई दिल्ली

विषयः सार्वजनिक स्थलों पर बढ़ते धूम्रपान से बढ़ते रोगों के संबंध में।

महोदय

मैं इस क्षेत्र की जागरूक नागरिक होने के नाते आपका ध्यान बवाना क्षेत्र की ओर आकृष्ट करना चाहती हूँ। यहाँ आजकल लोग पार्कों में बैठकर, सड़क के किनारे व सड़क पर चलने वाले प्रत्येक वाहन में धूमपान करते

हुए दिखाई दे रहे हैं। इसमें प्रत्येक उम्र के बच्चे, बड़े तथा बूढ़े व्यक्ति भी शामिल हैं। जहाँ एक ओर हम स्वच्छ भारत का नारा लगा रहे हैं, वहीं दूसरी ओर हम अनेक प्रकार के दुर्व्यसनों से अपने जीवन तथा अन्य लोगों के जीवन से खिलवाड़ कर रहे हैं। धूम्रपान करने वाला व्यक्ति न केवल स्वयं अपने जीवन को नष्ट कर रहा है, अपितु सार्वजनिक स्थलों में अपने आस-पास के लोगों को भी बीमार कर रहा है।

अतः आपसे नम्र निवेदन है कि हमारी इस समस्या को आप अपने अखबार में छापकर लोगों का ध्यान इस ओर आकृष्ट करें।

भवदीया

क०ख०ग०

अथवा

(ख) परीक्षा भवन
छात्रावास
अ.ब.स. विद्यालय
य.र.ल. नगर
25 जून, 20xx
प्रिय बहन,
शुभाशीष

मैं यहाँ पर कुशल हूँ तथा ईश्वर से तुम्हारी कुशलता की कामना करती हूँ। मुझे आज ही समाचार मिला कि तुम्हें एक आवासीय विद्यालय में प्रवेश मिल गया है। तुम्हें यह तो ज्ञात है कि तुम पढ़ाई में हमेशा अव्वल आती रही हो और तुमने अपने जीवन में सदैव अच्छे मित्रों का चुनाव किया है। एक अच्छा मित्र औषधि के समान होता है, जो जीवन की अनेक व्याधियों को दूर करता है इसलिए अच्छे मित्र के चुनाव में सदैव सावधानी बरतना, जिससे जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सको। आशा है कि तुम मेरा सुझाव जीवन-भर याद रखोगी और अमल करोगी। माता-पिता की तरफ़ से प्यार और मेरी ओर से प्यार।

तुम्हारी बहन
क०ख०ग०

14. (क)

नाम	–	मानव सिंह
पिता का नाम	–	श्री महेश सिंह
माता का नाम	–	श्रीमती पुष्पा देवी
जन्मतिथि	–	05/02/2000
वर्तमान पता	–	C- 153, नोएडा सेक्टर-51, उ०प्र०
स्थायी पता	–	उपर्युक्त
टेलीफोन न०	–	0120-89XXXXXX
मोबाइल नं०	–	9838XXXXXX
ई-मेल	–	Manav@gmail.com

क्र०सं०	परीक्षा/डिग्री/ डिप्लोमा	वर्ष	विद्यालय/बोर्ड/ महाविद्यालय/ विश्वविद्यालय	विषय	श्रेणी	प्रतिशत
1.	दसवीं कक्षा	2015	अ.ब.स. विद्यालय सी०बी०एस०ई०	अंग्रेजी, हिंदी, गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान	प्रथम	70%
2.	बारहवीं कक्षा	2017	अ.ब.स. विद्यालय सी०बी०एस०ई०	अंग्रेजी, हिंदी, गणित, इतिहास, भूगोल	प्रथम	72%
3.	बी०ए०	2020	श.ष.स. कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय	अंग्रेजी	प्रथम	70%
4.	डेस्क टॉप पब्लिशिंग प्रोग्राम में डिप्लोमा	2021 (एक वर्ष)	इग्नू			

अन्य योग्यताएँ

- कंप्यूटर का अच्छा ज्ञान एवं अभ्यास।
- हिंदी तथा अंग्रेज़ी भाषा का अच्छा ज्ञान।

उपलब्धियाँ

1. स्नातक तीन वर्षों में प्रथम श्रेणी से पुरस्कृत
2. वाव-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान

अभिरुचियाँ

1. देश-विदेश भ्रमण का शौक
2. संगीत का शौक

सम्मानित व्यक्तियों का विवरण

1. सोहन वर्मा, विधायक, पूर्व दिल्ली
2. होडल सिंह, प्रधानाचार्य, सर्वोदय सीनियर सेकेंडरी स्कूल - त्रिलोकपुरी, नई दिल्ली।

मैं प्रमाणित करता हूँ कि आवेदित पद के निर्धारित योग्यताएँ मुझमें है। मैं पूरी निष्ठा के साथ काम करूँगा।

धन्यवाद सहित

मानव

20 मार्च, 20xx

अथवा

(ख) प्रेषक – mns@gmail.com

प्राप्तकर्ता – abc@gmail.com

प्रतिलिपि (सी०सी०) – rbc@gmail.com

गोपनीय प्रतिलिपि (बी०सी०सी०) –

विषय – ऑर्डर रद्द करवाने के संदर्भ में।

महोदय,

सविनय आपके संज्ञान में लाना चाहता हूँ कि मैंने 26 अप्रैल, 20xx को आपकी कंपनी में कुछ किताबों का ऑर्डर दिया था, जो एक सप्ताह में मुझे प्राप्त हो जानी चाहिए थी। मेरा ऑर्डर नंबर 54321678 है। दस-बारह दिन बीत जाने पर भी मुझे अभी तक किताब नहीं मिली। मेरी पढ़ाई का नुकसान हो रहा था। किसी तरह मैंने किताबों का प्रबंध कर लिया है। इतनी प्रतिष्ठित कंपनी द्वारा ऐसी लापरवाही शोभा नहीं देती। मैं जानता हूँ कि कंपनी उपभोक्ताओं की ज़रूरतों का ध्यान रखती है। विश्वास है कि भविष्य में ऐसा नहीं होगा। आप मेरा ऑर्डर रद्द कीजिए। कृपया मेरे द्वारा जमा की गई धनराशि वापिस लौटा दीजिए। आशा है कि आप इस पर जल्दी ही कार्यवाही करेंगे। बिल की कॉपी मेल के साथ संलग्न है।

कृपया मेल स्वीकार कीजिए।

सधन्यवाद।

सहयोगांकाक्षी

अ.ब.स.

15. (क)

जीवन को नहीं मिलता शुद्ध हवा का झोंका
सोचो, कौन कर रहा है, किससे धोखा....।

प्रकृति का ना करें हरण...
आओ, बचाएँ पर्यावरण...

**''आओ, मिलकर पेड़ लगाएँ,
देश को प्रदूषण मुक्त बनाएँ।''**

भारत सरकार द्वारा जनहित में जारी...

अथवा

(ख)

राष्ट्रपति
भारत सरकार
दिनांक 15 अगस्त, 20XX
सुबह - 6:00 बजे

स्वतंत्रता-दिवस के महापर्व पर राष्ट्र की सेवा में अपना सर्वस्व अर्पण करने वाले सभी अमर बलिदानियों को कोटि-कोटि नमन। उनका त्याग और बलिदान राष्ट्र हमेशा याद रखेगा।

समस्त देशवासियों को स्वतंत्रता-दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ!

'जय हिंद'।

क०ख०ग०